**30/05/2020**

# Educational Psychology

Paper III

B.A. II (Hons.)

# What is Guidance?

# निर्देशन क्या है?

निर्देशन का साधारण अर्थ होता है मार्गदर्शन करना। अर्थार्थ, ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति को मार्गदर्शन मिल सके, जो उसके अभियोजन में सहायक हो सके उसे निर्देशन कहते हैं। जो व्यक्ति समस्याओं के साथ अभियोजन स्थापित करना नहीं जनता है वह उसके अपने लिए तथा समाज के लिए हानिप्रद होता है। ऐसे व्यक्ति को एक मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है जो उसकी अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं, योग्यताओं, साधनों एवं बाह्य परिस्थितियों के बीच अभियोजन स्थापित करने में सहायक हो सके। इसी मार्गदर्शन की क्रिया को निर्देशन कहा जाता है। व्यक्ति अपना अभियोजन दो प्रकार से कर सकता है। कभी वह बाह्य परिस्थितियों में परिवर्तन ला कर उसे अपने अनुकूल बना देता है और कभी अपने में परिवर्तन ला कर वह स्वयं परिस्थितियों के अनुकूल बना लेता है। इस प्रकार निर्देशन में वे सभी बातें आ जाती हैं जिनका उपयोग कर के व्यक्ति अपने अभियोजन से सम्बंधित सभी समस्याओं को स्वयं सुलझा सकता है। निर्देशन में किसी भी प्रकार की बाध्यता नहीं रहती है, किसी बात को मानने के लिए दबाव नहीं डाला जाता है, क्यूंकि यह आदेश नहीं बल्कि एक प्रकार की सहायता है जो व्यक्ति को उसकी समस्याओं के समाधान के उद्देश्य से योग्य से योग्य और प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा प्रदान की जाती है। अतः स्पष्ट है की निर्देशन व्यक्ति को अपने जीवन को व्यवस्थित करने एवं उसके दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए प्रदान की गयी सहायता है। निर्देशन की प्रक्रिया में कम-से-कम दो व्यक्ति होते हैं- निर्देशन देने वाला तथा निर्देशन प्राप्त करने वाला। निर्देशक निर्देशित व्यक्ति को सहायता प्रदान

करता है। निर्देशित व्यक्ति अपनी प्रतिभा, बौद्धिक क्षमता, सामजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का ज्ञान कर के भरपूर लाभ उठाने का प्रयास करता है।

निर्देशन के स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए अनेक मनोवैज्ञनिकोओं ने इसे परिभाषित किया। निर्देशन की परभाषा देते हुए **Author Jones** ने कहा **"व्यक्तियों को बुद्धिमत्तापूर्वक चुनाव का समायोजन करने में दी जाने वाली सहायता निर्देशन है।"**

United States Office of Education ने इस सम्बन्ध में लिखा है - **"निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति का परिचय विभिन्न उपायों से जिनमें विशेष प्रशिक्षण भी सम्मिलित है, तथा जिनके माध्यम से व्यक्ति की प्राकृतिक शक्तियों का बोध हो, कराती है जिससे वह अभिकतम व्यक्तिगत एवं सामजिक हित कर सके।"**

**Skinner** ने इस सम्बन्ध में कहा है **"निर्देशन युवकों को स्वयं से, अन्य से और परिस्थितियों से समायोजन करना सीखने के लिए सहायता देने की प्रक्रिया है।"**

**Crow and Crow** ने इसका विवरण करते हुए लिखा है **"निर्देशन आदेश नहीं है। वह अपनी विचारधाराओं को दूसरों पर लादना नहीं है। यह उन निर्णयों का जिन्हें एक व्यक्ति को अपने लिए निश्चित करना चाहिए, निश्चित करना नहीं है, यह दूसरों के दायित्वों को अपने ऊपर लेना नहीं है, बल्कि निर्देशन तो वह सहायता है जो एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को प्रदान करता है। इस सहायता से वह व्यक्ति अपने जीवन का पथ स्वयं ही निश्चित करता है तथा अपना दायित्व संभालता है।"**

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर निर्देशन की एक समुचित परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है।

**"निर्देशन वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं, योग्यताओं एवं साधनों के साथ-साथ अपनी दुर्बलताओं को समझने तदनुसार अपने भावी जीवन को बनाने तथा समाज में अभियोजन करने में सहायक होती है।"**

इस परिभाषा का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित बातें देखने को मिलती हैं -

1. निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जो अभियोजन में सहायक होती है।
2. इससे व्यक्ति को अपने गुणों एवं अवगुणों को समझने का अवसर मिलता है।
3. यह भावी जीवन को बनाने में सहायक होती है।
4. निर्देशन एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करता है जिसमें व्यक्ति अपनी वास्तविक रूपरेखा को समझने में समर्थ होता है।

**(... to be continued)**

**Dr. Hena Hussain**

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com